विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

साहित्य की दुनिया के हाल-चाल

लेखक साथियों से जब भी अनौपचारिक चर्चा होती है, कुछ मुद्दे अवश्य ही सामने आते हैं। इनमें से पहला मुद्दा होता है प्रकाशन के संकट का। नामी लेखकों को छोड़ दें तो अधिकांश की पीड़ा होती है कि किताब छपवाना बहुत कठिन है। प्रकाशक का व्यवहार उनकी अपेक्षा के अनुरूप नहीं होता है, वह प्राय: पुस्तक के प्रकाशित करने न करने के बारे में स्पष्ट जवाब नहीं देता है, और अगर वह किसी की पाण्डुलिपि प्रकाशन के लिए स्वीकार कर भी लेता है तो यह नहीं बताता है कि किताब प्रकाशित कब तक होगी, और अगर बता भी दे तो प्राय: उस बताई गई तिथि तक किताब छपती नहीं है। किताब छप जाने के बाद लेखक को मिलने वाली मानार्थ प्रतियों का मुद्दा, और उसके बाद किताब को समीक्षा के लिए भेजने में प्रकाशक की अनिच्छा, और अंत में रॉयल्टी का सवाल। बहुत ही कम प्रकाशक हैं जो नियमित रूप से रॉयल्टी का हिसाब लेखक को भेजते हैं। लेखक की यह शिकायत तो रहती ही है कि जितनी किताबें बिकीं, प्रकाशक ने उससे बहुत कम बताई। इस सारे प्रकरण में प्रकाशक का भी अपना पक्ष है। वह भी लेखक के व्यवहार से प्राय: असंतुष्ट पाया जाता है। उसका भी रोना कि किताबें बिकती ही नहीं है, वह लेखक को रॉयल्टी कहां से दे? यह आम स्थिति है, और जैसा सब जगह होता है इसके अपवाद भी हैं।

मज़ेदार बात यह है कि इस सबके बावज़ूद किताबें खूब छप रही हैं और नए-नए प्रकाशक सामने आ रहे हैं। पुराने और स्थापित प्रकाशकों का धंधा खूब फल-फूल रहा है। यह सब कैसे और क्यों हो रहा है– इसे कोई नहीं जानता। लेकिन इसी में एक आयाम और जुड़ता है। इधर अपनी किताब का प्रकाशन करवाने के इच्छुक लोगों की संख्या बहुत तेज़ी से बढ़ी है। अब हरेक ही ऐसा लिख लेगा जिसे पढ़ने के लिए लोग टूट पड़ें, ऐसा तो मुमकिन है नहीं। बहुत सारे नए लेखकों का लेखन खासा अपरिपक्व होता है। व्यवसाय करते-करते प्रकाशक इस बात का थोड़ा-बहुत जानकार तो हो ही जाता है कि लेखन कैसा है! उस लेखन पर कोई प्रकाशक भला अपना पैसा क्यों लगाएगा? इस स्थिति में पिछले कुछ बरसों से लेखकों के सामने एक नया विकल्प आ गया है, जिसे असम्मानजनक भाषा में पैसे देकर किताब छपवाना और सम्मानजनक भाषा में पुस्तक प्रकाशन की स्व वित्तपोषी योजना कहा जाता है। आप प्रकाशक के पास जाएं, अपनी पांडुलिपि दें, उसकी बताई राशि दें, जो इस आधार पर तय होती है कि आप प्रकाशित किताब की कितनी प्रतियां लेंगे, और कुछ दिनों में आपकी छपी हुई किताब आपके हाथों में होगी। ठीक वैसे ही जैसे आप पैसे देकर दुकान की बिल बुक, पैम्फ्लट या शादी का निमंत्रण पत्र छपवाते हैं। इधर शादी के निमंत्रण पत्र छपने करीब-करीब बंद हो गए हैं तो मुद्रण करने वालों के लिए किताब छापने का यह नया धंधा आ गया है। उन्होंने अपना नाम भी मुद्रक से अपग्रेड करके प्रकाशक कर लिया है। इस तरह खूब किताबें छप रही हैं। छप कर समारोह पूर्वक लोकार्पित हो रही हैं, अखबारों में उनके लोकार्पण की ख़बरें छप रही हैं और यदा-कदा उनमें से कुछ की समीक्षाएं भी कहीं दिखाई दे जाती हैं। इसके बाद इन में से कुछेक को कोई न कोई पुरस्कार भी मिल जाता है और लेखक के बायो डाटा में कुछ और पंक्तियां जुड़ जाती हैं।

अब एक नई शिकायत सामने आती है। इस बार लेखक की तरफ से, कि किताब पढ़ने वाले बहुत कम हो गए हैं। यहां तक कि जिन्हें उसने अपनी किताब सादर/सप्रेम भेंट की उन्होंने भी उसे नहीं पढ़ा, खरीद कर पढ़ने की तो बात ही क्या की जाए! लेखक की शिकायत समीक्षक से भी रहती है कि वह उसकी किताब पर नहीं लिखता है, और अगर कभी प्रतिकूल कुछ लिख दिया तो उसके लिए पक्षपात-गुटबाजी वगैरह का आरोप भी तैयार रहता है। समीक्षक वही ईमानदार और निष्पक्ष होता है जो तुरंत आपकी किताब पर प्रशंसात्मक लिख डाले। क्योंकि बाबा तुलसीदास कह गए हैं, निज कवित्त केहि लाग न नीका, हर रचनाकार अपने लिखे पर मुग्ध रहने का पूरा अधिकार रखता है। अगर किसी को उसकी रचना पसंद न आई तो इसमें दोष उसके लेखन का नहीं, पढ़ने वाले की समझ का होता है। कोई लेखक अपने लिखे का बेबाक मूल्यांकन सुनना या उसकी बेहतरी के लिए कोई सुझाव ग्रहण करना नहीं चाहता। वह केवल और केवल सराहना चाहता है। जितनी ज़्यादा हो उतना ही अच्छा! शिकायत समीक्षक की भी होती है, कि लेखक उससे अनुचित अपेक्षाएं रखता है। संकट यह भी है कि हमारे पास लेखक बहुत ज़्यादा हैं, समीक्षक बहुत कम। समीक्षक अगर दिन रात 24$7 यही काम करता रहे तो भी वह सबको संतुष्ट नहीं कर सकता।

निमंत्रण पत्र में समय छपेगा तीन बजे, अतिथि गण को कहा जाएगा कि आप साढ़े तीन बजे तक आ जाना, और कार्यक्रम शुरु होगा चार बजे। और जब शुरु हो गया, तो फिर चलता ही रहेगा। लोग अनर्गल बोलते रहेंगे। ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि निमंत्रण में ही साफ़ लिखा हो कि कार्यक्रम तीन से पांच बजे तक होगा, और असल में भी ऐसा ही हो। वक्ताओं पर भी कड़ा नियंत्रण हो।

जो हाल किताबों का है उससे बहुत भिन्न हाल साहित्यिक गोष्ठियों का नहीं है। गोष्ठियां होती हैं और खूब होती हैं। लेकिन उनमें श्रोता, साहित्य रसिक बहुत कम होते हैं। कुछ गिने-चुने लोग हर गोष्ठी में नज़र आते हैं। मंच पर भी, और मंच के सामने भी। इनमें साहित्य के प्रति रुचि कम और रिश्तों के निर्वाह का दायित्व बोध अधिक होता है। गोष्ठियों में जो चर्चा होती है वह भी रस्म अदायगी जैसी होती है। जैसे आप विवाह में जाते हैं और दो-तीन रस्मी बातें कहते हैं कि जोड़ी बहुत अच्छी है, व्यवस्था बहुत अच्छी है, उसी तरह गोष्ठी अगर किसी किताब के लोकार्पण पर हो तो एक जैसी बातें कही जाती हैं। गोष्ठी के आयोजक भी एक बने बनाए ढांचे से बाहर नहीं निकलते हैं। आमंत्रितों की एक सूची होती है जो सभी आयोजकों के पास रहती है। कभी नए श्रोताओं को जोड़ने या उन तक पहुंचने का प्रयास नहीं होता है। साहित्यिक कार्यक्रमों के प्रचार के प्रति उदासीनता बरती जाती है। आयोजक उनकी अग्रिम सार्वजनिक सूचना देने का कोई ख़ास प्रयास करते दिखाई नहीं देते। किसी को पता भी कैसे चले कि कोई गोष्ठी हो रही है। फिर, गोष्ठी में लिहाज़ और संपर्क प्रदर्शन के मोह में मंच को इतना बड़ा कर दिया जाता है कि औपचारिकताओं के निर्वाह में और फिर मंचासीन हरेक के संबोधन में श्रोताओं के धैर्य की भारी परीक्षा हो जाती है। ज़्यादातर मंचासीन विशिष्ट जन के पास कहने को कुछ नहीं होता फिर भी वे बीस-तीस मिनिट तो कहते ही हैं। इससे, अगर ऐसी गोष्ठी में कोई नया प्राणी पहुंच जाए तो वह अगले साल भर तक ऐसी किसी और गोष्ठी में जाने से तौबा कर लेता है। अभ्यस्तों की बात अलग है।

इन साहित्यिक गोष्ठियों के बारे में आयोजकों का रवैया बहुत ही अजीब रहता है। वे आमंत्रित तो करेंगे लेकिन यह बताने में संकोच करेंगे कि आपको किस हैसियत में बुला रहे हैं और आपसे कितनी देर बोलने की अपेक्षा करते हैं। होना यह चाहिए कि स्पष्ट कहा जाए कि आपको आयोजन की अध्यक्षता करनी है और मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि आदि ये-ये लोग होंगे। यह भी कि आपको दस मिनिट बोलना है। और अच्छा हो कि यह भी स्पष्ट बता दिया जाए कि आपको विषय के इस पक्ष पर बोलना है। लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता हो।

साहित्यिक आयोजन करने वाली संस्थाओं के पास पैसों का अभाव होता है, इसलिए उनसे कोई मानदेय तो दूर, यात्रा व्यय की भी अपेक्षा नहीं करता है। लेकिन जो संस्थाएं अमीर हैं, अनुदानित हैं या सरकारी हैं वे भी अपने अतिथियों को कभी स्पष्ट नहीं बताती हैं कि आपको इतना मानदेय और इतना यात्रा व्यय दिया जाएगा। बल्कि बहुत बार तो साधन संपन्न होते हुए भी वे इतना-सा सौजन्य भी नहीं बरतती हैं कि आमंत्रित अतिथि गण को समुचित यात्रा व्यय तो दे दें। आप जेब से खर्चा करके आएं और धन्यवाद लेकर लौट जाएं! संस्थाएं जो खर्चा करती हैं वह भी प्राय: विवेक शून्य होता है। फूल मालाओं या बुके पर खूब खर्च किया जाता है, तथाकथित स्मृति चिह्न पर अच्छा खर्च किया जाता है, इधर गले में एक पट्टा डालने का नया चलन देखने में आया है। उत्साही संस्थाएं उस पट्टे पर बहुत बड़े अक्षरों में अपनी संस्था का नाम भी छपवा देती हैं। अब सोचिये कि उस पट्टे का, जिस पर आपने सौ डेढ़ सौ रुपये खर्च किए हैं, आपका अतिथि क्या करेगा? मैंने आज तक किसी को वैसा पट्टा धारण किए नहीं देखा। आपके पास पैसे कम हैं तो उनकी इस तरह बर्बादी तो मत कीजिए।

और जब बर्बादी की बात आ ही गई है तो यह और जोड़ दूं कि इस तरह के आयोजनों में सबसे बड़ी बर्बादी समय की होती है। निमंत्रण पत्र में समय छपेगा तीन बजे, अतिथि गण को कहा जाएगा कि आप साढ़े तीन बजे तक आ जाना, और कार्यक्रम शुरु होगा चार बजे। और जब शुरु हो गया, तो फिर चलता ही रहेगा। लोग अनर्गल बोलते रहेंगे। ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि निमंत्रण में ही साफ़ लिखा हो कि कार्यक्रम तीन से पांच बजे तक होगा, और असल में भी ऐसा ही हो। वक्ताओं पर भी कड़ा नियंत्रण हो। उन्हें इस बात के लिए पाबंद किया जाए कि वे निर्धारित समयसीमा का अतिक्रमण न करें। औपचारिकताएं कम से कम हो। वक्ताओं का लंबा चौड़ा परिचय देने में समय नष्ट न किया जाए।

कोई प्रयास तो करके देखे।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

नये भारत के नये आयामों को गढ़ता भारत-अमेरिका संबंध

डॉ. निमिषा

मानवीय कल्याण से वैश्विक शांति एवं समृद्धि की कामना का संदेश भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने न्यूयार्क में 69वें संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र में दोहराया। 'एक धरती, एक परिवार और एक भविष्य' के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का आह्वान करते हुए एक धरती, एक स्वास्थ्य, एक सूरज, एक दुनिया के मापदण्डो से विचारधाराओं की एकता पर बल दिया। विश्व के पटल पर मानव केंद्रित दृष्टिकोण से सतत विकास को प्राथमिकता देने की बात भी कही जिसमें मानव कल्याण, भोजन, स्वास्थ्य, सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

भारत में 25 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से उपर आ गए हैं। यह उदाहरण देकर प्रधानमंत्री मोदी ने यू.एन.जी.ए. में कहा कि सतत विकास भी सफल हो सकता है। डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर की तकनीकी ने लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की है। इन उपलब्धियों को ग्लोबल साउथ के साथ साझा करने की पेशकश करते हुए कहा डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर लोगों के लिए एक पुल जैसा हो। यह किसी के लिए बाधा नहीं बनना चाहिए। समिट ऑफ द फ्यूचर को संबोधित करते हुए पी.एम. मोदी ने कहा कि मानवता की सफलता हमारी सामूहिक शक्ति में है युद्ध के मैदान में नहीं। जी-20 की मेजबानी भी भारत ने सफलता पूर्वक की एवं अफ्रीकन यूनियन को जी-20 का स्थायी सदस्य बनाने का प्रस्ताव भी पारित करवाया। यह भारत का मानवीय हित के प्रति दृष्टिकोण ग्लोबल भविष्य में मानवीय केंद्रित दृष्टिकोण साधता है।

यू.एन.जी.ए. के 194 देशों के प्रतिनिधित्व के सामने विशाल लोकतांत्रिक देश के प्रमुख का उद्बोधन मायने रखता है। ऐसे समय में गंभीर जीओपॉलीटिकल और इकोलोजीकल चुनौतियां सामने हैं। यू.एन. महासचिव एंट्रोनियो गुटरेस ने सुरक्षा परिषद के पांच वीटो पावर समेत 15 सदस्यों की प्रासंगिकता भी वैश्विक चुनौतियों का समाधान न खोज पाने पर चिंता व्यक्त की है। भारत की स्थायी सदस्यता की मांग का पुरजोर समर्थन अमेरिका, फ्रांस, जापान के अतिरिक्त जी-4 ग्लोबल साउथ, एल 69 और सी-10 (अफ्रिकी देश) कर रहे हैं जिससे वैश्विक चुनौतियों का स्थायी समाधान खोजा जा सके। यह विश्लेषण महत्वपूर्ण भी है जब रूस-यूक्रेन युद्ध इजरायल-गाजा पट्टी तनाव के अतिरिक्त आतंकवाद साम्राज्य विस्तारवाद और क्षेत्रीय अस्थिरता के द्वंद्व से सभी राष्ट्र जूझ रहे हैं। भारतीय प्रधानमंत्री के तीन दिवसीय अमेरिका दौरे ने कई आयामों से नवाचारों का संदेश दिया जिसमें तकनीक, ए.आई., क्वांटम कम्प्यूटिंग और सेमीकंडक्टर को बढ़ावा दिया जाए।

इसी यात्रा में वैश्विक शांति और स्थिरता को पी.एम. मोदी ने फिलिस्तीन राष्ट्रपति महमूद अब्बास के साथ द्विपक्षीय वार्ता में भी कहा। इजराइल फिलिस्तीन मुद्दे पर फिलिस्तीन के प्रति भारत के समर्थन की पुष्टि की और युद्ध विराम, बंधकों की रिहाई व वार्ता और कूटनीति के रास्ते पर लौटने का आह्वान किया।

अमेरिका यात्रा के दौरान यह भी प्रतीत हुआ कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति स्थिरता के लिए चतुष्पक्षीय सुरक्षा संवाद (क्वॉर्ड) की प्रमुख भूमिका हो सकती है। एक स्वतंत्र और खुले हिंद प्रशांत क्षेत्र की शांति प्रगति और समृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए भारत के प्रधानमंत्री का अमेरिका के राष्ट्रपति बाइडेन ने चौथे क्वार्ड लीडर शिखर सम्मेलन के लिए गर्मजोशी से अपने घर डेलावेयर में स्वागत किया। यह स्वागत नये भारत के नये वैश्विक आयामों का है। विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और चौथी बड़ी सैन्य शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाला भारत आज शक्तिशाली है। कोरोना महामारी के समय भारत का सद्भाव, सहयोग और संबल से भरे व्यवहार ने भारतीयता के प्रति वैश्विक पटल पर विश्वास कायम किया है। भारत में 2.20 अरब से ज्यादा टीकाकरण हो चुका है। विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक रिवाज भाषाओं की पृथकता के बावजूद अर्थव्यवस्था के व्यापक बदलाव के पैमानों को लांघकर भारत ने दुनिया की एकजुटता की प्रेरणा दी है। वर्ष 2017 से क्वाड संवाद भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया के मध्य एक ऐसा अनौपचारिक कूटनीतिक मंच है जिनके मध्य शिखर सम्मेलन सूचनाओं का आदान-प्रदान और सेना का अभ्यास होता रहा है। क्वाड क्षेत्र में आने वाले समुद्री क्षेत्र, अंतरिक्ष, जलवायु, स्वास्थ्य एवं साइबर तकनीकी जैसे बिन्दुओं पर परियोजनाओं का नेतृत्व करता है। क्वाड की बैठक में पी.एम. नरेन्द्र मोदी ने स्पष्ट कहा कि क्वाड किसी के खिलाफ नहीं है बल्कि यह नियमों पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था और सम्प्रभुता के सम्मान के पक्ष में हैं।

इसी बैठक में क्वाड संगठन ने स्वास्थ्य, सुरक्षा, साझेदारी, क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा क्षमताओं को बढ़ाने के लिए मैत्री तथा समुद्र के अंदर केबल और डिजिटल कनेक्टिविटी का जाल वर्ष 2025 तक सम्पूर्ण हिन्द प्रशांत क्षेत्र में उपलब्ध करवाने का निर्णय लिया है।

मोदी-3 की विदेश कूटनीतियां महत्वपूर्ण रहेंगी क्योंकि मोदी-1 विश्वास कायम करने में मोदी-2 ने पहले पड़ोस की नीति और छोटे देशों के साथ प्रगाढ़ सम्बन्धों के निर्माण को कायम किया है। इस काल में इधर मेक इन इंडिया और मेड इन इंडिया अभियानों ने मोबाइल से लेकर मिसाइल तक भारत को आत्मनिर्भर बनाया, उधर सीमा पार गलवन घाटी, डोकलाम, पीओके के तनाव का दृढ़ता से सामना किया है। मोदी-3 भी राष्ट्र हित को सर्वोपरी रखते हुए आत्मनिर्भर भारत की वसुधैव कुटुम्बकम धारणा पर कार्य करते हुए विश्व को एक परिवार मानने वाला साक्षात्कार देगा। पुष्पक की पांच पंखुड़ियों को खिलाता किवसित भारत मानवीय मूल्यों के साथ बागे बढ़ रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा से लेकर जीओ बाइडन तक भारत अमेरिका के परस्पर रिश्तों में व्यापार, रक्षा-सुरक्षा, सौहार्द्र के साथ-साथ लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता भी रही है।

ऐसे में साम्राज्यवादी चीन को चुनौती मिलना स्वाभाविक है। एक ओर खाद्य, ऊर्जा, स्वास्थ्य, तकनीकी और सुरक्षा की साझेदारी दूसरी और शांति, समृद्धि, कल्याण और क्षेत्रीय स्थिरता का सामूहिक संकल्प लेते दोनों देशों के संबंधों में ऐसा लगता है कि आने वाले समय में एक धरती एक परिवार, एक भविष्य का भारतीय संकल्प वैश्विक पटल पर रिश्तों के नये आयामों को स्थापित करेगा जिसमें राष्ट्रीय सम्प्रभूता और अखण्डता अक्षुण्य रहेगी।

–डॉ. निमिषा,
असिस्टेंट प्रोफेसर
कानोड़िया पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर।

"पारख साहित्य पुरस्कार" से सम्मानित हुये प्रो. जहूर खां मेहर

जयपुर। राजस्थानी भाषा देश की समृद्ध भाषाओं में से एक है, इसका उल्लेखनीय प्राचीन एवं आधुनिक साहित्य है, अपनी व्याकरण एवं अपना शब्दकोश है, इसको संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान मिलना चाहिए। यह विचार राजस्थानी भाषा के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो.जहूर खां मेहर ने रविवार को प्रयास संस्थान चूरू द्वारा कन्हैयालाल रतनलाल पारख साहित्य पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद व्यक्त किए। प्रो.मेहर ने कहा कि लेखक के घर आकर अंलकृत करने से बड़ा क्या सम्मान होता है और ऐसा कोई संस्थान कर रहा है तो यह संपूर्ण साहित्य एवं भाषा का सम्मान है।

- **प्रो. मेहर उम्र आधिक्य एवं स्वास्थ्य कारणों के चलते प्रयास संस्थान द्वारा चूरू में आयोजित समारोह में शिरकत नहीं कर पाए थे**
- **लेखक के घर आकर अंलकृत करने से बड़ा क्या सम्मान होता है और ऐसा कोई संस्थान कर रहा है तो यह संपूर्ण साहित्य एवं भाषा का सम्मान है : जहूर खां**

प्रयास संस्थान के अध्यक्ष एवं राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने कहा कि प्रो. मेहर का आधुनिक राजस्थानी निबंध साहित्य में जो योगदान है, वह अद्वितीय है। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष एवं साहित्यकार डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने प्रो. मेहर को भाषा एवं साहित्य की समन्वित धारा के वाहक बताया तो राजस्थान साहित्य अकादमी की सरस्वती सभा के पूर्व सदस्य डॉ. कालूराम परिहार, साहित्यकार भंवरलाल सुथार, अशोक डूडी ने भी प्रो. मेहर के योगदान को रेखांकित किया। इससे पूर्व सुंदरदेवी लक्ष्मीदेवी पारख ट्रस्ट कोलकाता प्रायोजित कन्हैयालाल रतनलाल पारख साहित्य पुरस्कार के तहत वर्ष 2024 अंतर्गत इक्कावन हजार रुपये का चैक, शॉल, साफा, प्रतीक चिह्न से प्रो. मेहर को अंलकृत किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रो. मेहर उम्र आधिक्य एवं स्वास्थ्य कारणों के चलते प्रयास संस्थान द्वारा चूरू में आयोजित समारोह में शिरकत नहीं कर पाए थे। इसी के अनुक्रम में संस्थान ने जोधपुर उनके घर आकर यह सम्मान प्रदान किया।

राजस्थानी भाषा के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो.जहूर खां मेहर को प्रयास संस्थान चूरू द्वारा कन्हैयालाल रतनलाल पारख साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दुर्गा पूजा, दिवाली और छठ पूजा पर रेलवे यात्रियों को त्यौहारी सौगात देगी

जोधपुर, (कासं)। रेलवे द्वारा दुर्गा पूजा, दिवाली और छठ पूजा के दौरान यात्रियों की सुगम यात्रा के लिए व्यापक प्रबंध किए गए हैं। यात्रियों को गंतव्य तक सुगमता के साथ पहुंचाने के लिए रेलवे द्वारा स्पेशल रेल सेवाओं के संचालन करने के साथ-साथ अतिरिक्त डिब्बे लगाए जा रहे हैं। आगामी त्यौहारों के सीजन को ध्यान में रखते हुए उत्तर-पश्चिम रेलवे द्वारा 56 स्पेशल रेल सेवाओं का संचालन किया जा रहा है। इसके साथ ही नियमित रेल सेवाओं में अतिरिक्त डिब्बे लगाकर यात्रियों को त्यौहारी सौगात दी जा रही हैं।

- **उत्तर-पश्चिम रेलवे द्वारा 56 स्पेशल रेल सेवाओं का संचालन किया जा रहा है**
- **नियमित रेल सेवाओं में अतिरिक्त डिब्बे लगाकर यात्रियों को त्यौहारी सौगात दी जा रही है**

उत्तर-पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी कैप्टन शशि किरण के अनुसार दुर्गा पूजा, दिवाली और छठ पूजा के दौरान अतिरिक्त यात्री भार को देखते हुए उत्तर-पश्चिम रेलवे द्वारा विशेष प्रबंध किए जा रहे हैं। यात्रियों की सुगम यात्रा के लिए उत्तर पश्चिम रेलवे पर वर्तमान में 56 स्पेशल रेल सेवाओं का संचालन किया जा रहा है जिनके 2150 ट्रिप विभिन्न स्थानों के लिए संचालित होंगे। यह रेल सेवाएं उत्तर पश्चिम रेलवे के क्षेत्राधिकार से बान्द्रा टर्मिनस, रांची, आसनसोल, हावडा, टनकपुर, गोरखपुर, पटना, महू, सोलापुर, हरिद्वार, दौंड, संतरागांछी, डिब्रुगढ, श्रीमातावैष्णो देवी कटरा, तिरूपति, काचीगुडा, हैदराबाद, गौहाटी, कोयम्बटूर इत्यादि शहरों के लिए संचालित हो रही है।

आगामी त्यौहारी सीजन में यात्रियों की आरामदायक यात्रा के लिए रेल सेवाओं में अतिरिक्त डिब्बे लगाए जा रहे हैं। उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा अक्टूबर माह के लिए 56 जोड़ी रेल सेवाओं में 115 विभिन्न श्रेणियों के डिब्बे लगाए गए है। उत्तर-पश्चिम रेलवे द्वारा लगातार यात्री भार की समीक्षा की जा रही है और जिस भी मार्ग पर स्पेशल रेल सेवा की आवश्यकता होगी संचालन किया जाएगा और अतिरिक्त डिब्बे लगाने का प्रबंध किया जाना प्रस्तावित है।

हर साल दुर्गा पूजा, दीपावली और छठ पूजा के अवसर पर देश भर से बड़ी संख्या में लोग उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल की ओर प्रस्थान करते हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार के लोगों के लिए ये त्योहार न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि परिवारों से मिलने का भी एक अहम अवसर होते हैं। हर साल त्यौहारों के दौरान यात्रियों की भीड़ की वजह से अधिकांश ट्रेनों में दो-तीन महीने पहले से ही टिकट वेटिंग लिस्ट में चली जाती हैं। इसी को देखते हुए रेलवे द्वारा इस वर्ष भी त्यौहारों के अवसर पर स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। रेलवे का पूरा प्रयास है कि त्यौहारों के सीजन में यात्रियों की यात्रा सुगम व आरामदायक हो इसके लिए उच्च स्तर पर लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है और संबंधित अधिकारियों का दिशा-निर्देश प्रदान किए जा रहे हैं ताकि यात्रियों को परेशानी नहीं हो।

कल्पित एवं भाटिया को घासीराम वर्मा साहित्य पुरस्कार मिलेगा

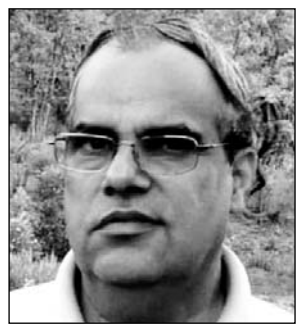

कृष्ण कल्पित एवं जितेंद्र भाटिया।

जयपुर। साहित्य, संस्कृति एवं सामाजिक सरोकारों में संलग्न प्रयास संस्थान, चूरू द्वारा प्रांत के हिंदी साहित्य को समर्पित वार्षिक "घासीराम वर्मा साहित्य पुरस्कार" वर्ष 2023 के लिए देश के प्रख्यात लेखक, कवि और गीतकार कृष्ण कल्पित एवं वर्ष 2024 के लिए जयपुर के जितेंद्र भाटिया को दिया जाएगा।

प्रयास संस्थान के सचिव कमल शर्मा ने बताया कि संस्थान द्वारा वर्ष 2008 से निरंतर यह वार्षिक पुरस्कार राजस्थान के हिंदी साहित्यकारों को प्रदान किया जाता है। इस कड़ी में वर्ष 2023 के लिए यह पुरस्कार फतेहपुर-शेखावाटी में जन्मे कृष्ण कल्पित को उनकी काव्यकृति "रेख्ते के बीज और अन्य कविताएं" के लिए तथा वर्ष 2024 के लिए जयपुर निवासी जितेंद्र भाटिया की कथेतर गद्य कृति "कांक्रीट के जंगल में गुम होते शहर" के लिए दिया जाएगा। सचिव शर्मा ने बताया कि पुरस्कार स्वरूप प्रत्येक साहित्यकार को इक्कावन-इक्कावन हजार रुपये, शॉल, श्रीफल और मानपत्र देकर अंलकृत किया जाएगा। पुरस्कार समारोह इसी अक्टूबर में चूरू में प्रस्तावित है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 30 सितम्बर, 2024

अश्विन मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र मंगलवार प्रात: 9:16 तक, शुभ योग रात्रि 1:18 तक, वणिज करण रात्रि 7:07 तक, चन्द्रमा सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा सायं 7:07 से आरम्भ होगी। आज सोम प्रदोष व्रत, तेरस का श्राद्ध, कलियुगादि तिथि, युगाब्द 5126 आरम्भ, मास शिवरात्रि है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:51तक, शुभ 9:20 से 10:48 तक, चर 1:46 से 3:14 तक, लाभ-अमृत 3:14 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:23, सूर्यास्त 6:11

मेष
परिजनों के व्यवहार से दु:ख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

तुला
आर्थिक मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
घर-परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।